सूरह — एक कहानी

# सूरह अत-तग़ाबुन

## हार-जीत का दिन

पूरा सफ़र — बड़ा सौदा और हिदायत पाया दिल —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 64 • 18 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

### एक नज़र में सूरह

हुवल्-लज़ी ख़लक़कुम फ़-मिन्कुम काफ़िरुंव्-व मिन्कुम मु'मिन
2. वही है जिसने तुम्हें बनाया, फिर तुम में कोई काफ़िर है और कोई मोमिन।

व सव्वरकुम फ़-अह्सन सुवरकुम
3. और उसने तुम्हारी शक्लें बनाईं, फिर उन्हें बेहतरीन बनाया।

मा असाब मिम्-मुसीबतिन इल्ला बि-इज़्निल्-लाह। व मंय्-यु'मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बह
11. कोई मुसीबत नहीं आती मगर अल्लाह के इज़्न से; और जो अल्लाह पर ईमान लाए, अल्लाह उसके दिल को हिदायत देता है।

इन्नमा अम्वालुकुम व औलादुकुम फ़ितनह
15. तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो बस एक आज़माइश हैं।

फ़त्तक़ुल्-लाह मस्-तत'अ्तुम
16. तो जितनी ताक़त हो उतना अल्लाह से डरो।

व मंय्-यूक़ शुह्ह नफ़्सिही फ़-उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून
16. और जो अपने नफ़्स की तंगी से बचा लिया जाए, वही कामयाब हैं।

## वो दिन जिसका नाम बाज़ार से लिया गया

बेटा, अल्लाह ने अपनी किताब में आख़िरी दिन को कई नाम दिए — अल-क़ारि'अह, खटखटाने वाली; अल-हाक़्क़ा, यक़ीनी हक़ीक़त; अल-वाक़ि'अह, होने वाला वाक़िआ। और यहाँ वो उसे एक ऐसा नाम देते हैं जो **तिजारत** की ज़ुबान से लिया गया: **यौमुत्-तग़ाबुन** — हार-जीत का दिन, वो दिन जब एक फ़रीक़ को पता चलता है कि वो सौदे में मात खा गया।

अरब 'ग़ब्न' उस सौदे के लिए इस्तेमाल करते थे जिसमें एक तरफ़ दूसरे से बेहतर ले कर चला जाए — तुमने सोना बेच दिया ये समझ कर कि वो पीतल है, और बाद में पता चला कि तुम्हारे हाथ से क्या निकला। और उलमा उस दिन के मतलब की ख़ूबसूरती से वज़ाहत करते हैं: जन्नत वाले उन्हें वो जगहें दिखाई जाएँगी जिनसे वो

आग में **बच** गए, और आग वाले उन्हें वो जगहें दिखाई जाएँगी जो उन्होंने जन्नत में **खो** दीं — और हर एक वो विरासत में पाएगा जो दूसरे ने छोड़ा। वुजूद का सबसे बड़ा सौदा, बेटा: **हमेशगी की नशिस्तें आपस में बदली गईं**, उम्र-भर के चुनावों के बल पर।

और यही इस सूरह की ख़ामोश तंबीह है: हर इंसान दिन भर तिजारत करता रहता है — घंटे पैसे के बदले, तवानाई रुतबे के बदले, तवज्जोह तफ़रीह के बदले। सिर्फ़ सवाल ये है कि **एक ऐसी ज़िंदगी के बदले जो कभी वापस नहीं आती, आप क्या पा रहे हैं।**

## बनाया, शक्ल दी, कमाल किया — फिर दो रास्ते

सूरह इस से शुरू होती है कि आसमानों और ज़मीन में हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह कर रही है — 'उसी की बादशाहत है, और उसी की तारीफ़ है, और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।' और फिर वो इंसानी सूरत-ए-हाल को हैरत-अंगेज़ सीधेपन से बयान करती है: 'हुवल्-लज़ी ख़लक़कुम — वही है जिसने तुम्हें बनाया — फ़-मिन्कुम काफ़िरुंव्-व मिन्कुम मु'मिन — फिर तुम में कोई काफ़िर है, और कोई मोमिन। और अल्लाह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।'

एक ही असल, बेटा; दो सिम्तें। **कोई हारने वाली तरफ़ पर पैदा नहीं होता**; सौदा दिल के पहले आज़ाद चुनाव से शुरू होता है, और उसके बाद हर चुनाव में जारी रहता है।

फिर अल्लाह हमें वो शरफ़ याद दिलाते हैं जो उन्होंने हमें किसी चुनाव से पहले अता किया: 'उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया, **व सव्वरकुम फ़-अह्सन सुवरकुम** — और उसने तुम्हें शक्ल दी, और तुम्हारी शक्लें **कमाल** कीं — और उसी की तरफ़ लौटना है।' बेटा, एक बुरे दिन में आईना आपसे चाहे जो कहे, आपकी बनावट पर क़ुरआन का फ़ैसला क़ायम है: **'अह्सन सुवरकुम' — उसने आपकी सूरत बेहतरीन बनाई।** फिर वो याद दिलाते हैं कि वो जानते हैं जो आसमानों और ज़मीन में है, जो हम छुपाते और ज़ाहिर करते हैं, और जो 'सीनों में है — सद्र, दिल का ज़ाती कमरा।

और वो उन क़ौमों को याद करते हैं जिन्होंने इनकार किया। उनका ए'तिराज़, बेटा, तारीख़ का सबसे पुराना ए'तिराज़ है, और ये आज भी नए अल्फ़ाज़ में गूँजता है: '**अ-बशरुंय्-यह्दूनना** — क्या हमारे जैसे इंसान हमें राह दिखाएँगे?' वो हिदायत कहीं से भी चाहते थे सिवाए अपने जैसे किसी से — और यूँ वो फिर गए, 'और अल्लाह उनसे बे-नियाज़ हो गए।'

## कहिए: हाँ, मेरे रब की क़सम

फिर वो दावा आता है जिसे मुनकिरों की हर नस्ल ने दोहराया: 'जो लोग इनकार करते हैं वो **गुमान** करते हैं कि वो कभी दोबारा ज़िंदा नहीं किए जाएँगे।' और अल्लाह अपने रसूल ﷺ को हुक्म देते हैं कि एक क़सम के साथ जवाब दें — पूरे क़ुरआन में सिर्फ़ तीन जगहों में से एक जहाँ नबी ﷺ को अपने रब की क़सम खाने का हुक्म दिया गया:

'क़ुल बला व रब्बी ल-तुब्'असुन्न सुम्म ल-तुनब्ब-उन्न बिमा 'अमिल्तुम — कहिए: **हाँ, मेरे रब की क़सम**, तुम ज़रूर दोबारा ज़िंदा किए जाओगे; फिर तुम्हें ज़रूर बताया जाएगा जो तुमने किया। और ये अल्लाह के लिए **आसान** है।'

बेटा, जब किसी बात में बहुत से लोग शक करते हैं मगर वो बिल्कुल यक़ीनी है, तो क़ुरआन बे-इंतिहा बहस नहीं करता — वो क़सम खाता है, और आगे बढ़ जाता है। 'तो अल्लाह और उसके रसूल पर और उस **नूर** पर ईमान लाओ जो हमने उतारा' — और ग़ौर कीजिए कि क़ुरआन यहाँ ख़ुद को नूर कहता है। क्योंकि ऐसी बात में, बेटा, मसला कभी दलील की ग़ैर-मौजूदगी नहीं होती; ये **उस नूर की ग़ैर-मौजूदगी होती है जिसमें दलील दिखे।**

और फिर उस दिन का नाम: 'वो दिन जब वो तुम्हें जमा होने के दिन के लिए इकट्ठा करेगा — **ज़ालिक यौमुत्-तग़ाबुन**। और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक अमल करे — वो उस से उसकी बुराइयाँ मिटा देगा और उसे उन बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। **यही** बड़ी कामयाबी है।'

## टूटे हुए दिनों की आयत

और अब, बेटा, हम उस आयत पर पहुँचते हैं जिसने लाखों मोमिनीन को उनकी ज़िंदगी के सबसे बुरे दिनों पर थामे रखा — इसे अपनी जेब में एक चिराग़ की तरह रखिए: '**मा असाब मिम्-मुसीबतिन इल्ला बि-इज़्निल्लाह** — कोई मुसीबत नहीं आती मगर अल्लाह के **इज़्न** से — **व मंय्-यु'मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बह** — और जो अल्लाह पर **ईमान** लाए, वो **उसके दिल को हिदायत** देता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।'

ताबि'ई आलिम अल्क़मा ने इस आयत की एक जुमले में वज़ाहत की जो याद करने के लायक़ है: **ये वो आदमी है जिसे मुसीबत आती है, और वो जानता है कि ये अल्लाह की तरफ़ से है — तो वो राज़ी हो जाता है, और सर तस्लीम ख़म कर देता है।** और बदले में, बेटा, देखिए अल्लाह क्या करते हैं: वो **उसके दिल को हिदायत** देते हैं। 'वो मुसीबत हटा देते हैं' नहीं — कभी हटाते हैं, कभी नहीं — बल्कि वो दिल को उस के **अंदर** से राह दिखाते हैं, जहाँ घबराहट थी वहाँ सुकून रख कर, जहाँ उलझन थी वहाँ मानी, जहाँ तन्हाई थी वहाँ क़ुर्बत।

सौदा महसूस कीजिए, बेटा — ये इस सूरह का सबसे मुनाफ़े वाला सौदा है: **आप रज़ामंदी लाते हैं; वो हिदायत बिठा देते हैं।** मुसीबत अपने साइज़ में वही रह सकती है, मगर उसे उठाने वाला दिल उस से बड़ा हो जाता है।

और इसी लिए मोमिन का किसी सदमे पर रद्द-ए-अमल अलग होता है। वो ये नहीं कहता 'मेरे साथ ही क्यों?' — वो कहता है **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**। वो रो सकता है, जैसे नबी ﷺ रोए जब उनके बेटे इब्राहीम का इंतिक़ाल हुआ, ये कहते हुए: आँख आँसू बहाती है, दिल ग़मगीन होता है, और हम वही कहते हैं जो हमारे रब को राज़ी करे। **उदासी जायज़ है, बेटा; मायूसी नहीं** — क्योंकि मायूसी कहती है कि मुसीबत उसके इज़्न के बाहर से कहीं से आई।

## घर के अंदर का इम्तिहान

फिर सूरह एक ऐसी बात कहती है जो बहुत नाज़ुक है, और जिसे बहुत से लोग ग़लत समझ लेते हैं: 'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू इन्न मिन अज़्वाजिकुम व औलादिकुम 'अदुव्वल्-लकुम फ़ह्ज़रूहुम — ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से कुछ तुम्हारे लिए **दुश्मन** हैं, तो उन से बच कर रहो — **व इन त'फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्-रहीम** — और अगर तुम **माफ़ कर दो, दर-गुज़र करो, और बख़्श दो**, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाले, रहीम हैं।'

बेटा, इस 'दुश्मनी' को समझिए। ये नफ़रत की दुश्मनी नहीं — ये वो खिंचाव है जो कभी कभी सबसे महबूब लोगों की तरफ़ से आपको अल्लाह से दूर ले जाता है: वो बीवी जो हिजरत या सदक़े से रोके, वो बेटा जिसकी ख़्वाहिशों के लिए आदमी हराम कमाई पर उतर आए, वो घर वाले जो आपको हज या सही काम से रोकें ताकि आराम बरक़रार रहे।

और अब उस हुक्म की हिकमत देखिए, बेटा। अल्लाह ने ये नहीं कहा 'उनसे लड़ो' या 'उन्हें छोड़ दो'। उन्होंने ठीक इसी आयत में तीन लफ़्ज़ जोड़ दिए: **'अफ़्च** (माफ़ी), **सफ़्ह** (दर-गुज़र, मुँह मोड़ लेना बग़ैर ताना दिए), और **मग़्फ़िरह** (ढाँप देना)। तो हुक्म ये है: **अपने दीन को उनकी खिंच से बचाओ — माफ़ी के साथ, कभी सख़्ती से नहीं।** पारसाई के नाम पर अपने घर में ज़ालिम मत बनो।

और फिर पूरे मामले का साइज़ ठीक किया जाता है: '**इन्नमा अम्वालुकुम व औलादुकुम फ़ितनह** — तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो बस एक **आज़माइश** हैं — वल्लाहु 'इंदहू अज्रुन 'अज़ीम — और अल्लाह के पास अज़ीम अज्र है।' **मोहब्बत के लायक़, हाँ। अमानत, हाँ। इबादत के लायक़, कभी नहीं।** बेटा, याद कीजिए नबी ﷺ कैसे हसन और हुसैन (रज़ि0) को गोद में ले कर चूमते, और बच्चों को 'हमारे दिलों के फल' कहते — और फिर भी आपने हमें सिखाया कि ये फल एक इम्तिहान हैं, इस लिए दिए गए ताकि देखा जाए कि हम उन्हें अल्लाह की तरफ़ कैसे ले जाते हैं, न कि उन से दूर।

## जितनी ताक़त हो उतना

और अब, बेटा, सूरह पूरे क़ुरआन के सबसे रहीम हुक्मों में से एक पर ख़त्म होती है — हर उस रूह के लिए एक आयत जो बुलंद मेयारों के नीचे काँपती हो: '**फ़त्तक़ुल्लाह मस्-तत'अ्तुम** — तो **जितनी ताक़त हो उतना** अल्लाह से डरो — वस्म'ऊ व अती'ऊ व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लि-अन्फ़ुसिकुम — और **सुनो**, और **इताअत** करो, और **ख़र्च** करो; ये तुम्हारे अपने नफ़्स के लिए बेहतर है।'

'मस्-तत'अ्तुम' — अपनी गुंजाइश के मुताबिक़। बेटा, कुछ दिल ख़ुद को गुनाह-एहसास से तोड़ देते हैं: मैं हर रात तहज्जुद नहीं पढ़ सकता, मैं दूसरों की तरह हिफ़्ज़ नहीं कर सकता, मैं अमीरों की तरह नहीं दे सकता। अल्लाह कहते हैं: **जो तुम कर सकते हो वो लाओ, ख़ुलूस से** — और जान लो कि वो किसी नफ़्स से उसकी गुंजाइश से ज़्यादा कभी नहीं माँगते। मगर तवाज़ुन भी सुनिए: 'जितनी ताक़त हो' एक **रहमत** है, एक **छूट नहीं**। इसका मतलब है अपना सच्चा पूरा ज़ोर लगाओ — फिर बिना गुनाह-एहसास के सुकून करो।

और फिर सूरह असल दुश्मन का नाम लेती है — न ज़ौजा, न बच्चा, न मुसीबत: '**व मंय्-यूक़ शुह्ह नफ़्सिही फ़-उलाइक हुमुल्-मुफ़्लिहून** — और जो अपने **नफ़्स की तंगी** से बचा लिया जाए — **वही** कामयाब हैं।' आपके और जन्नत के दरमियान सबसे बड़ी रुकावट, बेटा, आपके अपने सीने के अंदर बसती है, और उसका नाम है **शुह्ह**: वो तंग, जकड़ती हुई आवाज़ जो सरगोशी करती है 'इसे रख लो, शायद ज़रूरत पड़ जाए।'

और इलाज क्या है? अल्लाह उसे ठीक अगली लाइन में तजवीज़ करते हैं, और ये सूरह की सबसे ख़ूबसूरत पेश-कश है: '**इन तुक़्रिज़ुल्लाह क़र्ज़न हसनंय्-युज़ा'इफ़्हु लकुम व यग़्फ़िर लकुम** — अगर तुम अल्लाह को **अच्छा क़र्ज़** दो, तो वो उसे तुम्हारे लिए **कई गुना** बढ़ा देगा और तुम्हें **बख़्शा** देगा — **वल्लाहु शकूरुन हलीम** — और अल्लाह क़द्र-दान, बुर्दबार हैं।'

इन आख़िरी दो नामों पर ठहरिए, बेटा। वो बादशाह जो हर चीज़ का मालिक है आपके सदक़े को अपनी तरफ़ **क़र्ज़** कहता है — और फिर ख़ुद को **अश-शकूर** कहता है, वो जो **क़द्र करता है**: वो आपका शुक्रिया अदा करता है, उस तोहफ़े पर

जो उसी ने आपको दिया, एक ऐसे तरीक़े से ख़र्च किया जो आपको फ़ायदा देता है। और **अल-हलीम** — बुर्दबार: वो उन लोगों को सज़ा देने में जल्दी नहीं करते जो उन्हें निराश करते हैं।

यही वो रब है जिस से हम तिजारत कर रहे हैं, बेटा। **तग़ाबुन के दिन, जिसने भी उन से सौदा किया, वो ये नहीं पाएगा कि वो मात खा गया।**

और सूरह की आख़िरी आयत दायरा बंद कर देती है: 'ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, ग़ालिब, हिकमत वाला।'

## इस सूरह से क्या सीखा

**1.** हर रोज़ आप एक ऐसी ज़िंदगी का सौदा कर रहे हैं जो कभी वापस नहीं आती — देख लीजिए आप बदले में क्या पा रहे हैं।

**2.** आपकी सूरत उसने कमाल की — 'अह्सन सुवरकुम'; किसी बुरे दिन को अपने बारे में उसका फ़ैसला दोबारा लिखने मत दीजिए।

**3.** हर मुसीबत का इस्तिक़बाल 'ये अल्लाह की तरफ़ से है, और मैं रज़ामंद हूँ' से कीजिए — और वो पाइए जिसका उन्होंने वादा किया: एक **हिदायत-याफ़्ता, थामा हुआ दिल।**

**4.** ग़म जायज़ है; मायूसी नहीं — 'इन्ना लिल्लाहि' के साथ आँसू सुन्नत हैं; फ़ैसले के ख़िलाफ़ शिकायत नहीं।

**5.** अपने ख़ानदान से मोहब्बत कीजिए, इबादत सिर्फ़ अल्लाह की — और जब उनकी खिंच उसकी पुकार से टकराए, तो जवाब 'अफ़्व, सफ़्ह और मग़्फ़िरह से दीजिए, कभी सख़्ती से नहीं।

**6.** 'फ़त्तक़ुल्लाह मस्-तत'अ्तुम' — अपना सच्चा पूरा ज़ोर लगाइए, फिर गुनाह-एहसास से सुकून कीजिए।

**7.** अपने सीने के अंदर की **शुह्ह** को मुसलसल देने से मात दीजिए — वो उसे क़र्ज़

कहते हैं, उसे बढ़ा देते हैं, उस से बख़्श देते हैं, और उसपर आपका शुक्रिया अदा करते हैं।

या अल्लाह, मुसीबत में हमारे दिलों को हिदायत दीजिए, अपने घरों के अंदर हमारे दीन की हिफ़ाज़त कीजिए, हमें हमारे नफ़्स की तंगी से बचाइए, और तग़ाबुन के दिन हमें मात खाने वालों में मत रखिए। आमीन।